वर्णमातृका एवं शक्तिपीठ रहस्य

प्रोफेसर राजेन्द्र प्रसाद शर्मा 'शिवानन्दनाथ'
पूर्व-प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
दर्शन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर। (राज.)
55 गोविन्द नगर, वैशाली नगर, जयपुर-302021
फोन-9413970601

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21589411

सारांश: यह अध्ययन शाक्त परंपरा और तंत्र शास्त्र के अंतर्गत 'वर्णमातृका' (संस्कृत वर्णमाला के 51 अक्षर) और 51 'शक्तिपीठों' (माता सती के पवित्र तीर्थ स्थल) के बीच छिपे गूढ़ और दार्शनिक संबंधों का अन्वेषण करता है। तांत्रिक ब्रह्मांड विज्ञान के अनुसार, यह संपूर्ण सृष्टि नाद (शब्द ब्रह्म) और ऊर्जा (शक्ति) का ही प्रकटीकरण है। यह आलेख उस पौराणिक और आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालता है जिसके अनुसार माता सती के शरीर के अंग जहाँ-जहाँ गिरे, वहाँ शक्तिपीठ स्थापित हुए, और ये 51 पीठ सीधे तौर पर संस्कृत की 51 मातृकाओं (ध्वनियों) से जुड़े हुए हैं। तंत्र ग्रंथों का विश्लेषण करते हुए, यह शोध यह स्पष्ट करता है कि कैसे भौगोलिक शक्तिपीठों का वृहद ब्रह्मांड (Macrocosm) मानव शरीर के सूक्ष्म ब्रह्मांड (Microcosm) को दर्शाता है, जहाँ ये 51 मातृकाएं शरीर के विभिन्न चक्रों में निवास करती हैं। अंततः, यह विषय भाषा विज्ञान, भूगोल और तांत्रिक आध्यात्मिकता के अद्भुत समन्वय को प्रस्तुत करता है, और यह सिद्ध करता है कि ब्रह्मांडीय ध्वनियां ही भगवती शक्ति का मूल स्वरूप हैं।

मुख्य शब्द : वर्णमातृका, शक्तिपीठ, तंत्र शास्त्र एवं शाक्त परंपरा, शब्द ब्रह्म, मातृका न्यास।

तन्त्रशास्त्र की दृष्टि से शब्दसृष्टि में 51 वर्ण माने जाते हैं। समस्त भाषिक विलास इनका प्रपञ्चस्वरूप है। भर्तृहरि ने वाक्यपदीय के मङ्गलपद्य में ब्रह्म को शब्दरूप सिद्ध किया है।

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यत:।।

प्रणवात्मक ब्रह्म निखिल विश्व का उपादान है वही शक्तिरूपा सती शरीर में तथा सम्पूर्ण वाङ्मय के मूलभूत मातृकावर्णों में व्यक्त होता है। जैसे विश्व का शक्ति रूप में पर्यवसान है तथैव वर्णमातृका में वाङ्मय प्रपञ्च अन्तर्भूत होता है। शब्द और पदार्थ का वाच्यवाचक सम्बन्ध उनमें अभेद को सिद्ध

करता है। अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार साधक इष्टदेवता, मन्त्र तथा शक्तिपीठ के सम्बन्ध में जोडने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त कर लेता है। ब्रह्म को शब्दरूप या अक्षररूप कहने का रहस्य यही है।

भारतीय तान्त्रिक परम्परा में आदिशक्ति की वर्णरूपा उपासना अनादिकाल से प्रचलित है। इसके अनेक सिद्धपीठ भी मान्य रहे हैं। देवी भागवत (7.30.53-102) में 108, स्कन्दपुराण (रेवाखण्ड 98 अध्याय) में अनेक, कलिकापुराण (18.42.51) में कुछ पीठों की नाम चर्चा है। 51 पीठों का विस्तृत भौगोलिक विवरण तन्त्र चूडामणि में उपलब्ध है। समस्त मन्त्र वर्णस्वरूप है। वर्णमातृका की अर्चना या साधना बिना तन्त्रमार्ग पर एक कदम भी नहीं चला जा सकता है। जप से पूर्व विहित न्यास प्रक्रिया में मातृकान्यास की प्रधानता सर्वविदित है। शक्ति का स्वरूप पीठ भी है। अत: षोढान्यास में 51 पीठों का न्यास साधक अपने पारमार्थिक साधना देह में करता है। ये पीठ 51 वर्णमातृका के प्रतीक है। नित्याषोडशिकार्णव में स्पष्टत: कहा है—

पीठास्तु विन्यसेद् देवि मातृकास्थानके प्रिये। 8.39

एते पीठा: समुद्दिष्टा मातृकारूपका: स्थिता:।। 8.46

भास्करराय की सेतुबन्ध ,पृ. 317, 39-46 में प्रामाणिक पीठों की नामावली इस प्रकार प्राप्त हो जाती है—

वर्णमातृका	पीठ	सती का अङ्ग	मन्त्रविधा
अ	कामरूप	योनि	**श्रीविद्या**
आ	काशी	स्तन	**मुक्ति**
इ	नेपाल	गुह्य	**वाममार्ग**
ई	पौण्डवर्धन (रौद्रपर्वत)	वामनेत्र	**वामाचार**
उ	काश्मीर	वामकर्ण	**सर्वविधमन्त्र**
ऊ	कान्यकुब्ज	दक्षिणकर्ण	**वैदिकमन्त्र**
ऋ	पूर्णशैल	नासिक	**योग**
ॠ	अर्बुदपर्वत	गण्डस्थल	**वाममार्ग**
लृ	आम्रातकेश्वर	दक्षिणगण्डस्थल	**धनदायक्षिणी**
लॄ	एकाम्र	नख	**विद्याप्रदायक**
ए	त्रिस्रोत	त्रिवली	**पौष्टिकमन्त्र**
ऐ	कामकोटि	नाभि	**काममन्त्र**
ओ	कैलास	अङ्गुली	**करमाला**
औ	भृगु	दन्त	**वैदिकमन्त्र**

अं	केदार	दक्षिण करतल	-
अः	चन्द्रपुष्करिणी	वामगण्ड	**सर्वमन्त्र**
क	श्रीपुर (श्रीपीठ)	मस्तक	-
ख	ओङ्कार (अमरकण्टक)	बाहु	**जीवन्मुक्त, ज्योतिर्मन्त्र**
ग	जालन्धर	वक्षःस्थल	**अग्नितपस्या**
घ	मालव	वामस्कन्ध	**रागज्ञान**
ङ	कुलान्तक	दक्षिणकक्ष	**मारण, उच्चाटन आदि**
च	देवी कोट (कोट्टक)	वामकक्ष	**राक्षससिद्धि**
छ	गोकर्ण	जठर	-
ज	मारुतेश्वर	प्रथमवलि	**शैवमन्त्र**
झ	अट्टहास	अपर बलि	**गणेशमन्त्र**
ञ	विरजा	तृतीयवलि	**विष्णुमन्त्र**
ट	राजगृह	वस्तिपात	**वेदार्थज्ञान**
ठ	महापथ	नितम्ब	**अघोरीमन्त्र**
ड	कोलापुर	जघन	**वनदेवतामन्त्र**
ढ	एलापुर	दक्षिणऊरु	-
ण	कालेश्वर	वामऊरु	**आयुवृद्धि, मृत्युञ्जय**
त	जयन्तिका	दक्षिणजानु	**धनुर्वेद**
थ	उज्जयिनी	वामजानु	**कवचमन्त्र**
द	चित्रा (योगिनी)	दक्षिणजङ्घा	**कौलिकमन्त्र**
ध	क्षीरिका	वामजङ्घा	**वैतालिकमन्त्र**
न	हस्तिनापुर	दक्षिणगुल्फ	**सूर्यमन्त्र**
प	उड्डीश	वामगुल्फ	**उड्डीशमहामन्त्र**
फ	प्रयाग	देहरस (अस्थि)	-
ब	षष्ठीश	दक्षिणपृश्नि	**पादुकामन्त्र**
भ	मायापुरी	वामपृश्नि	**मायासिद्धि**
म	मलय	रक्त	**रक्ताम्बर (बौद्धमन्त्र)**
य	श्रीशैल	पित्त	**वैष्णवमन्त्र**
र	मेरु	मेद	**स्वर्णकर्षणभैरव**
ल	गिरि	जिह्वाग्र	**वाक्सिद्धि**
व	महेन्द्र	मज्जा	**शक्तिमन्त्र**

श	वामन	दक्षिण अङ्गुष्ठ	**समस्तमन्त्र**
ष	हिरण्यपुर	वामाङ्गुष्ठ	**वाममार्ग**
स	महालक्ष्मीपुर	रुचि (शोभा)	**सर्वसिद्धि**
ह	ओड्याण (अत्रि)	धमनी	**सिद्धि**
ळ	छाया	छाया	-
क्ष	**क्षत्र**	**केशपाश**	**समस्तसिद्धि**

परमगुरु करपात्र स्वामी ने मन्त्रों, सती के अङ्गों तथा पीठों में उपर्युक्त सम्बन्ध माना है।

नित्याषोडशिकार्णव के आरम्भ में मन्त्रमयी वर्णमातृका की स्तुति करते हुए 51 गणेश, 9 ग्रह, 27 नक्षत्र, 12 राशि, 7 योगिनी तथा 51 पीठ = 157 देवता का न्यास अपने शरीर में करने हेतु प्रार्थना की गई है—

गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्।।

इन पीठों का आध्यात्मिक दृष्टि से पारमार्थिक शरीर में न्यास किया जाता है। तन्त्र साधकों की जिज्ञासा रही है कि इनका अधिभौतिक स्वरूप क्या है? इस सम्बन्ध में बहुत ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् 51 पीठों की सूची तथा उनकी भौतिकस्थिति इस प्रकार मानी गई है—

क्र.	पीठ	भौगोलिक अवस्थिति	सती का अङ्ग	शक्ति का नाम	भैरव
1.	हिङ्गुला	हिङ्गलाज, बलूचिस्तान	ब्रह्मरन्ध्र	कोट्टरी	**भीमलोचन**
2.	करवीर	1. शक्कर नगर, सिन्धप्रान्त में 2. कोल्हापुर महाराष्ट्र में	त्रिनेत्र	महिषमर्दिनी	**क्रोधीश**
3.	सुगन्धा	शिकारपुर बांग्लादेश में मन्दिर	नासिका	सुनन्दा	**त्र्यम्बक**
4.	काश्मीर	1. क्षीरभवानी (श्रीनगर) 2. अमरनाथ गुफा	कण्ठ	महामाया	**त्रिसन्ध्येश्वर**

5.	ज्वालामुखी	कांगडा ज्वालामुखी रोड़ (हिमाचल प्रदेश)	जिह्वा	अम्बिका	**उन्मत्तभैरव**
6.	जालन्धर	त्रिगर्त हिमालय	स्तन	त्रिपुरमालिनी	**भीषण**
7.	वैद्यनाथ	वैद्यनाथ धाम (बिहार)	हृदय	जयदुर्गा	**वैद्यनाथ**
8.	नेपाल	पशुपतिनाथ के समीप वागमतीतट पर गुह्येश्वरी	जानु	महामाया	**कपाली**
9.	मानस	मानसरोवरतीर (तिब्बत)	अर्धदक्षहस्त	दाक्षायणी	**अमर**
10.	विरजा	जगन्नाथ मन्दिर	नाभि	विमला	**जगन्नाथ**
11.	गण्डकी	गण्डकी उद्गम (नेपाल)	गण्डस्थल	गण्डकी	**चक्रपाणि**
12.	बहुला	हवडा से 144 किलोमीटर (कटवा जंक्शन से पश्चिम 'केतुब्रह्मग्राम')	वामबाहु	बहुला	**भीरुक**
13.	उज्जयिनी	रुद्रसागर के पास उज्जैन हरसिद्धि मन्दिर	कूर्पर	मङ्गल/ चण्डिका हरसिद्धि	**कपिलाम्बर/ महाकाल**
14.	चट्टल	भवानीमन्दिर चटगांव (बङ्गलादेश) चन्द्रनाथ पर्वत	दक्षिणबाहु	भवानी	**चन्द्रशेखर**
15.	त्रिपुरा	उदयपुर या राधाकिशोर पुर त्रिपुरा में	दक्षपाद	त्रिपुरसुन्दरी	**त्रिपुरेश**

16.	त्रिस्रोता	शालबाडी तिस्ता तट जलपाईगुडी पं. बंगाल	वामपाद	भ्रामरी / अमरी	**ईश्वर/ अमर**
17.	कामगिरि	नीलपर्वत, गुवाहाटी कामाख्या मन्दिर	योनि	कामाख्या	**ह्यग्रीव-माधव उमानन्द**
18.	भूतधात्री	क्षीरग्राम, कोटयार वर्द्धमान (बंगाल)	दक्षिणापदांगुष्ठ	युगाद्या	**क्षीरखण्डक**
19.	कालीपीठ	(कालीघाट) कोलकाता	दक्षिण-पादाङ्गुली	कालिका	**नकुलेश्वर**
20.	प्रयाग	अलोपीदेवी	हस्ताङ्गुली	ललिता	**भव**
21.	जयन्ती	जयन्तिया श्रीहट्ट शिलांग से 53 किलोमीटर दूर	वामजङ्घा	जयन्ती	**कामेश्वरी**
22.	किरीट	किरीटकोना मुर्शिदाबाद (बंगाल)	किरीट	विमला	**संवर्तक**
23.	मणिकर्णिका	मीरघाट वाराणसी	कर्णकुण्डल	विशालाक्षी	**कालभैरव**
24.	कन्याश्रम ?	1. कुरुक्षेत्र 2. कुमारीकुण्ड चट्टगांव 3. कन्याकुमारी	पृष्ठ	शर्वाणी	**निमिष**
25.	कुरुक्षेत्र	द्वैपायनह्रद कुरुक्षेत्र	गुल्फ	सावित्री	**स्थाणु**
26.	मणिबन्ध	गायत्री मन्दिर पुष्कर	मणिबन्ध	गायत्री	**सर्वानन्द**
27.	श्रीशैल	श्रीशैल आन्ध्रप्रदेश मलिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग	ग्रीवा	महालक्ष्मी	**शम्बरानन्द**

28.	काञ्ची	तमिलनाडु	कङ्कालपात (कटि)	कामाख्या	**रुरु एकाग्रनाथ**
29.	कालमाधव	सोननदी तट	वामनितम्ब	काली	**असिताङ्ग**
30.	शोण	नर्मदा तट सासाराम की ताराचण्डी	दक्षिणनि-तम्बक	नर्मदा	**भद्रसेन**
31.	रामगिरि	शारदामन्दिर मैहर विलासपुर मध्यप्रदेश शारदा मन्दिर (चित्रकूट)	दक्षिणस्तन	शिवानी	**चण्डभैरव**
32.	वृन्दावन	केशीघाट वृन्दावन भूतेश्वर	केशपाश	उमा	**भूतेश**
33.	शुचि	कन्याकुमारी के पास शुचीन्द्र शिव मन्दिर	ऊध्वदन्त	नारायणी	**संहार**
34.	पञ्चसागर	पञ्चकुण्ड हरिद्वार	अधोदन्त	वाराही	**महारुद्र**
35.	करतोया	भवानीपुर (बोगडा से 32 किलोमीटर) (बांगलादेश)	तल्प	अपर्णा	**वामन**
36.	श्रीपर्वत	कृष्णा-तुङ्गाभद्रा सङ्गम लद्दाख काश्मीर सिलहट (असम)	दक्षतल्प	श्रीसुन्दरी	**सुन्दरानन्द**
37.	प्रभास	जूनागढ (गुजरात) गिरिनार अम्बाजी मन्दिर कालीमन्दिर (पासकुंडा)	उदर	चन्द्रभागा	**वक्रतुण्ड**

38.	विभास	तमलुक मेदिनीपुर (बङ्गाल)	वामगुल्फ	कपालिनी	**सर्वानन्द**
39.	भैरवपर्वत	उज्जैन क्षिप्राटट	ऊर्ध्वोष्ठ	महादेवी	**लम्बकर्ण**
40.	जनस्थल	पञ्चवटी, नासिक भद्रकाली मन्दिर	चिबुकद्वय	भ्रामरी	**विकृताक्ष**
41	गोदावरीतीर सर्वशैल	कोटितीर्थ गोदावरी गोदावरी तट	गण्ड वामगण्ड	विश्वेशी राकिणी	**दण्डपाणि वत्सनाभ**
42	रत्नावली	काना नदी तट हुगली नेपाल में रत्नावली संगम	दक्षिणस्कन्ध	कुमारी	**शिव**
43.	मिथिला	जनकपुर के पास उच्चैठ सहरसा में उग्रतारा मंदिर	वामस्कन्ध	उमा	**महोदर**
44.	नलहाटी	नलहाटी (वीरभूमिबङ्ग)	उदरनली	कालिका	**योगीश**
45.	कालीघाट	वर्द्धमान में काटयोर	मुण्डिपात	जयदुर्गा	**क्रोधीश**
46.	वक्रेश्वर	वीरभूम के पास सैन्थिया जंक्शन	मन	महिषमर्दिनी	**वक्रनाथ**
47.	यशोर	बङ्गला देश में खुलना के जशोर ईश्वरपुरी में	पाणिपद्म	यशोरेश्वरी	**चण्ड**
48.	अट्टहास	लाभपुर वीरभूमि	निम्नओष्ठ	फुल्लरा	**विश्वेश**
49.	नन्दिपुर	सौईथिया (बोलपुर शान्ति निकेतन) वीरभूमि	हार	नन्दिनी	**नन्दिकेश्वर**

50.	लङ्का	श्रीलङ्का में	नूपुर	इन्द्राक्षी	**राक्षसेश्वर**
51.	विराट्	वैराठ विराट् नगर (जयपुर से 65 किलोमीटर)	पादाङ्गुली	अम्बिका	**अमृत**
52.	**मगध**	**पटनेश्वरी पटना**	**दक्षिणजङ्घा**	**सर्वानन्दकरी**	**व्योमकेश**

इस प्रकार 51 पीठों की गणना होती है। *देवी भागवत* में 108 पीठ के नामोल्लेख है। *बंग भाषा अभिधान* 51 पीठ + 26 = 77 पीठों की सूची *कामरूप कामाख्या* ग्रन्थ में उपलब्ध है। पीठों से सती के अङ्गों के सम्बन्ध में पौराणिक आख्यान कहते हैं कि दक्षपुत्री सती ने अपने पिता के यज्ञ में जब अपने पति भगवान् शङ्कर के अपमान से स्वयं को कुण्ड में होम दिया, तब उनके शव को भगवान् शङ्कर अपने कन्धों पर लेकर उद्भ्रान्त भाव से नाचने घूमने लगे। सर्वत्र प्रलय सा हाहाकार मच गया तब देवताओं के अनुनय पर भगवान् विष्णु ने सुदर्शन चक्र द्वारा उस सती के शव के खण्ड-खण्ड कर विभिन्न अङ्ग और उनके पहने हुए आभूषण 51 स्थलों पर गिराये जिससे वे स्थल शक्ति पीठ के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। अब भारत में 42 पीठ है, एक पीठ पाकिस्तान में, 4 बाङ्गला देश में, 1 तिब्बत में, 1 श्रीलङ्का में तथा 3 नेपाल में है। कई अङ्गों के अधिक टुकडे होने से अनेक उपपीठ भी बन गये हैं।

कालिकापुराण (18.42.51) में देवीकूट, उड्डियान, कामरूप, जालन्धर, पूर्णगिरि कामरूप की पूर्व सीमा तथा गौहाटी इन प्रधान 7 पीठों का उल्लेख है। *रुद्रयामलतन्त्र* में दस प्रधान माने गये हैं— कामरूप, जालन्धर, पूर्णगिरि, उड्डियान, वाराणसी, ज्वालामुखी, मायावती, मथुरा, अयोध्या तथा काञ्ची। *कुब्जिकातन्त्र* में 42 तथा *ज्ञानार्णव* में 50 शक्तिपीठों का उल्लेख है। *योगिनीतन्त्र* तथा *तन्त्रचूडामणि* में 51 पीठों का विवरण है। *शारदातिलकटीका* में 64 पीठों का नामोल्लेख है। *शिवचरित* ग्रन्थ में 51 पीठ तथा 26 उपपीठों का प्रामाणिक विवेचन है *योगिनीतन्त्र* जप में शक्तिपीठों की महिमा इस प्रकार सिद्ध करता है—

यत्र यत्र महादेवा अङ्गप्रत्यङ्गपातनम्।
महाविष्णुश्चक्रपाणिश्चकार धरणीतले।
तत्र तत्र जगद्धात्री, ब्रह्मज्योतिस्वरूपिणी।
पाषाणरूपमास्थाय, भक्तानां मुक्तिहेतवे।।
साधकानाञ्च हितार्थं नित्यं वहरति क्षितौ।
तत्रैव भैरवः शम्भुः नानारूपधरः स्थितः।

रक्षार्थं साधकानाञ्च, हिताय जगतामपि।

उपासते स्वयं देवीं करुणानिधिरीश्वरः।।

अतः साधक मन्त्र सिद्धि के लिए शक्तिपीठ का आश्रय लेकर ही पूर्ण सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। इन स्थानों पर ही मन्त्र सरलता से जागृत होते हैं। इन पीठों के निर्धारण की समस्या है फिर भी अधिकतर पीठ विख्यात से प्रत्यक्ष सिद्ध है। पीठों का न्यास साधक अपने शरीर में कर सकता है। इसकी विधि षोढान्यास में प्राप्त है।